पर्यावरणवाद (Environmentalism)

Dr. Pawan Kumar Yadav

Introduction :-

पर्यावरणवाद की धारणा अत्यंत आधुनिक है। पर्यावरण के राजनीतिक विचारधारा का विकास, उपभोक्तावाद, बाजारवाद, उदारवाद एवं भू-मण्डलीकरण के विरोध के रूप में किया गया।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या ने इतना भीषण रूप धारण कर लिया है कि आज संपूर्ण मानव जाति का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। वर्तमान समय में विश्व के सभी राज्यों में विकास के लिए होड़ लगी हुई है। विकास के लिए औद्योगिकरण की आवश्यकता है, अतः औद्योगिकरण की इस आँधी दौड़ के कारण विषाक्त (poisionous) कूड़ा-करकट का जमाव बढ़ रहा है, वनों का विनाश हो रहा है, भूमण्डल का ताप बढ़ रहा है, इसके चलते भीषण समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव मानव के साथ-साथ, पक्षी, नदी-झील, पेड़-पौधे तथा अन्य सभी वस्तुओं पर भी पड़ रहा है। वातावरण प्रदूषण अब धीरे-धीरे इतना अधिक फैल गया है कि विशेषज्ञों का मत है कि पिछले 25 वर्षों में जितना प्रदूषण हुआ है वह लगभग 2000 वर्षों के बराबर है।

पर्यावरण का सिद्धांत :-

पर्यावरण प्रदूषण के कुप्रभाव को दूर करने के लिए जो तर्कों को उपस्थित किए गए हैं उसे हम पर्यावरण का राजनीति सिद्धांत

कह सकते है। पर्यावरण का राजनीतिक सिद्धांत कुछ मान्यताओं पर आधारित है। यह परंपरागत राजनीति सिद्धांत की कटु आलोचना करता है। इसके अनुसार परंपरागत राजनीति सिद्धांत मानवतावादी पर आधारित है जिससे सभी वस्तुओं का मूल्यांकन मनुष्य को केंद्र में मानकर किया जाता है।

परंतु पर्यावरणवादियों के अनुसार, इसमें अन्य जीव-जंतुओं के कल्याण की उपेक्षा की जाती है। परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत मानव का पक्षधर है एवं उसकी सुख-सुविधा की बेदी पर अन्य जीवों की बली चढ़ा दी है। यह तर्क देता है कि मनुष्य भी अन्य जीवों की तरह जीव है और प्रकृति में प्रत्येक जीव का अपना एक अलग महत्व है। अतः पर्यावरणवादकों के अनुसार, मनुष्य को सर्वोत्तम प्राणी मानकर चलना आवश्यक है। क्योंकि मानव का कल्याण एवं प्रगति कहीं-न-कहीं इन जीवों के साथ-साथ पर्यावरण से भी संबंधित है। अतः प्रत्येक का कल्याण दूसरों के कल्याण के साथ जुड़ा हुआ है। अतः मनुष्य का यह परम कर्तव्य है कि वह अन्य जीवों की रक्षा करे विनाश नही।

- पर्यावरण सिद्धांत पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए निम्नलिखित बातों पर बल देता है :—

① संपोषित विकास के लिए अग्रसर (Leading to Sustainable Development) :-

पर्यावरण का राजनीतिक सिद्धांत इस बात का भी विरोध करता है कि विज्ञान एवं तकनीक का प्रयोग कर प्रकृति को नियंत्रित किया जाए। यह प्रकृति का उपयोग विकास के साधन के स्रोत के रूप में करने का भी विरोध करता है। पर्यावरणवादकों के अनुसार मनुष्य साध्य एवं प्रकृति साधन नहीं है। वे एक ऐसी नीति को अपनाना चाहते हैं जिससे प्रकृति एवं ऊर्जा का प्रयोग न हो वह इसी Sustainable (संपोषित) विकास किया जा सके। संपोषित विकास उसे कहा जाता है जो आर्थिक रूप से लाभदायक हो तथा पर्यावरण के दृष्टिकोण से हितकर एवं सामाजिक रूप से न्यायसंगत हो।

② पर्यावरण की पवित्रता की निष्ठा :-

अरस्तू के कथन को उद्धृत करते हुए पर्यावरणवादियों ने कहा कि अगर राजनीति का उद्देश्य श्रेष्ठ जीवन को प्राप्त करना है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल मनुष्य का जीवन ही श्रेष्ठ हो बल्कि इसका वास्तविक अर्थ यह है कि मनुष्य के साथ सभी जीव-जंतुओं का जीवन भी श्रेष्ठ हो और यह तभी संभव होगा जब पर्यावरण की पवित्रता बनी रहेगी।

③ पर्यावरण को दूषित होने से रोकना :-

पर्यावरणवादी वर्ग (Bergue) के इस कथन से भी सहमत है कि यदि राज्य

भावी पीढ़ियों के बीच की साझेदारियों का परिणाम है तो वर्तमान पीढ़ी का यह कर्तव्य है कि वह पर्यावरण को इतना दूषित न करें जिससे आनेवाली पीढ़ियों का जीवन कष्टमय और संकटग्रस्त हो।

(4.) रचनात्मक सिद्धांत :—

पर्यावरण का राजनीति सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि प्राकृतिक व्यवस्था के संबंध मे मनुष्य को अत्यधिक महत्व न दिया जाए। यह एक ऐसी रचनात्मक सिद्धांत है जो कि समाज मे एक ऐसी व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत करता है जहाँ प्रकृति को महत्व दिया जाए, उसे सम्पोषित किया जाए तथा अपनी आनेवाली पीढ़ियों के लिए उसे सुरक्षित रखा जाए।

(5.) पर्यावरण बचाओ आंदोलन :—

पर्यावरण सिद्धांत का उद्भव एक आंदोलन के रूप में हाल के वर्षों में ही हुआ है किंतु इसका श्री गणेश 1834 में उस समय हुआ जब Thomas Robbry ने इस ओर लोगो का ध्यान आकृष्ट किया कि यदि जनसंख्या को नियंत्रित नही किया जाएगा तो आनेवाले समय में विज्ञान एवं तकनीक से जो भी प्रगति होगी वह बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण धीरे-धीरे स्वतः ही नष्ट हो जाएगी। 1960-90 के दशक में लोगों के अंदर पर्यावरण संबंधी जागृति उत्पन्न हुई और इसी के फलस्वरूप विकास की नीतियों एवं योजनाओं के विषय पर सार्वजनिक वाद-विवाद आरंभ हो ग

⑥ वैश्विक संगठन की स्थापना :—

1972 में स्टॉकहोम में आयोजित UNO के महासभा में भूमण्डलीय पर्यावरण की ओर विश्व का ध्यान आकृष्ट किया गया। 1969 में प्रदूषण की समस्याओं को सुलझाने के लिए दो संगठन "Friends of earth" और "Green politics" की स्थापना की गई। 1972 में सर्वप्रथम New zeland में हरित राजनीति नामक एक दल की स्थापना की गई। हालाँकि इससे उन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली।

⑦ पर्यावरण की समस्या (problems of the environment) :—

यद्यपि मानव जाति और प्रकृति एक दूसरे से आदिम काल से ही संबंधित रहे हैं किंतु आज प्रदूषण की समस्या इतनी गहरी हो गई है कि संपूर्ण पृथ्वी पर ही खतरा उत्पन्न हो गई है। भूमंडलीयता, ओजोन परत का क्षय होना, वनों का विनाश, जैसी समस्याओं ने पर्यावरण-वादियों को घोर संकट की स्थिति में डाल दिया गया है और Green politics के समर्थकों ने 'No growth' (विकास नहीं) का नारा लगाना शुरू कर दिया है।

⑧ World commission and environment Development की स्थापना :—

पर्यावरण की रक्षा और साथ-साथ आर्थिक विकास के उद्देश्य से 1980 में Inter-

national Union of the conservation of Natural Resources ने संपोषित विकास का सुझाव दिया। इसके साथ ही 1983 में World Commission and environmental Development की स्थापना UNO के महासभा द्वारा किया गया।

Conclⁿ :—

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ साधारण राजनीति का उद्देश्य समूहों के स्वार्थों की लड़ाई से है और इनमे सामंजस्य (Reconciliation) स्थापित करने के तरीके ढूंढे जाते है, वहाँ पर्यावरणवाद संपूर्ण मानव जाति के कल्याण को अपना लक्ष्य बनाता है। इस दृष्टि से यह राजनीति का उदार पक्ष प्रस्तुत करता है। परंतु कुछ वामपंथी राजनीति दल इस आधार पर पर्यावरणवाद का विरोध करते है कि यह राजनीति उत्पादन की गतिविधियों पर रोक लगाता है जिससे बेरोजगारी (unemployment) की समस्या बढ़ने का भारी खतरा है।

अंत में हम यह कह सकते है कि पर्यावरणवादियों के पास अपने विरोधियों का मुकाबला करने के लिए यथेष्ट शक्ति और साधन नही है। यही कारण है कि राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में पर्यावरणवादियों को विशेष सफलता नही मिल पाई है।